International Journal of Applied and Universal Research **E-ISSN No: 2395-0269**
Volume XI, Issue V, Sept. – October 2024 **Available online at: www.ijaur.com**
Impact Factor- 5.991

भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंम्परा की पर्यावरण संरक्षण में भूमिका

डा0 धीरेन्द्र पाण्डेय
शा0 आदर्श विज्ञान महा0 उमरिया (म0प्र0)

सारांश–: वस्तुतः मनुष्य की प्रगति का इतिहास प्राकृतिक परिवेश से उसके सामंजस्यपूर्ण व्यवहार की कहानी है। पर्यावरण ने अपने असंख्य–संगठित–समुदायों के साथ मनुष्य जीवन को खुशहाल एवं सुखमय बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। इसके मूल में मनुष्य का प्रकृति के प्रति सद ्भाव एवं सम्मानपूर्ण रवैया प्रमुख कारण रहा है। पर्यावरण संरक्षण को भारतीय संस्क ृति में विषेश महत्व दिया गया है। यहाँ मानव जीवन को सदैव मूर्त या अमूर्त रूप में पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र, नदी, वृक्ष एवं पशु–पक्षी आदि के साहचर्य में देखा गया है। मनुष्य एवं प्रकृति के आन्योन्याश्रित संबंध को भारतीय ऋषियों–मुनियों ने बड़ी गहराई से समझा था। यही कारण है कि भारतीय चिंतन में पर्यावरण –संरक्षण की अवधारणा उतनी ही प्राचीन है जितना कि यहां मानव का अस्तित्व रहा है हाँलांकि उसका स्वरूप वर्तमान समय से नितांत भिन्न रहा है। उस काल में पर्यावरण पर काम करने के लिए कोई सामाजिक संस्थायें या कोई राष्ट्रीय नीति नहीं थी। इसकी शायद आवश्यकता भी नहीं थी। ऋषि–मुनियों के द्वारा यह लोगों को घुट्टी में पिलाया जाता था जिसके कारण पर्यावरण संरक्षण का भाव मानव जीवन का अभिन्न अंग था तथा मनुष्य पर्यावरणीय नियमित क्रिया कलापों से जुड़ा हुआ था। भारतीय ऋषियों–मुनियों ने जनता को पहला पाठ यही सिखाया कि''इस सृष्टि में विद्यमान प्रत्येक जड़–चेतन वस्तु में आत्मिक साहचर्य है। अतः यहां कभी प्रकृति के उपादानों को मनुष्य से भिन्न नहीं देखा गया। यहां तक कि प्रकृति के अंगों में देवत्व दर्शन की यहां सनातन परंपरा रही है, जिसका अपना ठोस दार्शनिक एवं आध्यात्मिक आधार रहा है। ईश्वरीय सत्ता को सर्वव्यापी मानना और प्रत्येक जड़–चेतन में उसकी सत्ता को अनुभव करना, यही भारतीय आध्यात्म का सार है।

मुख्यशब्द–: भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंम्परा एंव पर्यावरण संरक्षण।

प्रस्तावना–:

पर्यावरण का संरक्षण केवल स्थानीय या राष्ट्रीय मामला नहीं, बल्कि विश्वव्यापी चिंता का विषय है। तेजी से छोटे होते विश्व में, पर्यावरण प्रदूषण एक ऐसी समस्या है जो सभी देशों को प्रभावित करती है, चाहे उनका आकार, विकास का स्तर या विचारधारा कुछ भी हो। पर्यावरण प्रदूषण एक ऐसी समस्या है जो लंबे समय से मौजूद है। इसकी खोज प्लेटो के समय में, लगभग 2500 वर्ष पहले की गई थी, और यह पृथ्वी पर होमो सेपियन्स की उपस्थिति जितनी ही पुरानी है लेकिन आधुनिक समय में पर्यावरण संरक्षण और इसके प्रबंधन के मुद्दे के विभिन्न पहलुओं ने गंभीर मोड़ ले लिया है। इसी दार्शनिक पृष्ठभूमि में प्रकृति के प्रति आस्था के प्रसून खिलते रहे हैं और उनमें देवत्व की झलक–झांकी मिलती रही है।'' आस्था शब्द व्यक्ति के आंतरिक भावों को प्रदर्शित करता है। धार्मिक आस्था हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है क्योंकि इस आस्था को बनाये रखने में ऋषि–मुनियों ने अनेक विधान रचे। भारतीय ऋषि–मनीषियों को प्रकृति का पारदर्शी ज्ञान था।

प्राकृतिक अनुराग एवं प्रकृति संरक्षण की चिंतनधारा भारतीय संस्कृति की सर्वोपरि विशेषता है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को माता के महनीय पद से अलंकृत किया गया है और इसके घटक पंचतत्वों तथा वृक्ष–वनस्पतियों को देवतुल्य मानकर अभ्यर्थना की जाती है क्योंकि प्रत्येक पेड़–पौधे, वनस्पति तथा वृक्ष में प्रकृति की अनुपम शक्ति और एक विशिष्ट रहस्य छुपा हुआ है, जिसको समझने व जानने के लिये हमारे ऋषियों ने जहाँ बड़े–बड़े ग्रन्थ लिखे, वहाँ इन वृक्षों के शुभ–अशुभ परिणामों को लेकर अनेक शोधपूर्ण अध्ययन भी किये। कौन से वृक्ष हमारे लिये उपयोगी हैं ? कौन से वृक्ष केवल सौन्दर्य की दृष्टि से उपयोगी है ? कौन से वृक्ष हवन की दृष्टि से पवित्र हैं। इन सभी तथ्यों की जानकारी हमारे वैदिक ग्रन्थों में विस्तृत रूप से देखने को मिलती है। वेदों में प्रकृति और पर्यावरण की इन्हीं सब विशेषताओं के कारण ही यहाँ पर पर्यावरण–संरक्षण और इसके विकास के प्रति सतत जागरूकता बनी रही है।

प्राचीन भारत में पर्यावरण संरक्षण :–

भारत में पर्यावरण संरक्षण का इतिहास बहुत पुराना है। हडप्पा संस्कृति पर्यावरण से ओत–प्रोत थी, तो वैदिक संस्कृति पर्यावरण–संरक्षण हेतु पर्याय बनी रही। भारतीय मनीषियों ने समूची प्रकृति ही क्या, सभी प्राकृतिक शक्तियों को देवता स्वरूप माना। ऊर्जा के स्त्रोत सूर्य को देवता माना तथा उसको 'सूर्य देवो भव' कहकर पुकारा। भारतीय संस्कृति में जल को भी देवता माना गया है। सरिताओं को जीवन दायिनी कहा गया है, इसीलिए प्राचीन संस्कृतियां सरिताओं के किनार` उपजीं और पनपी। भारतीय संस्कृति में केला, पीपल, तुलसी, बरगद, आम आदि पेड पौधों की पूजा की जाती रही है। मध्यकालीन एवं मुगलकालीन भारत में भी पर्यावरण प्रेम

बना रहा। अंग्रेजों ने भारत में अपने आर्थिक लाभ के कारण पर्यावरण को नष्ट करने का कार्य प्रारंभ किया। विनाशकारी दोहन नीति के कारण पारिस्थितिकीय असंतुलन भारतीय पर्यावरण में ब्रिटिश काल में ही दिखने लगा था। स्वतंत्र भारत के लोगों में पश्चिमी प्रभाव, औद्योगीकरण तथा जनसंख्या विस्फोट के परिणामस्वरूप तृष्णा जाग गई जिसने देश में विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों को जन्म दिया।

पर्यावरण संरक्षण में धर्म की भूमिका :–

धर्म और पर्यावरण में एक गहरा संबंध है तथा सभी धर्मों का दृष्टिकोण प्रकृति के प्रति सकारात्मक रहा है। उदाहरण के तौर पर बौद्ध धर्म का मत है कि सभी जीव–जंतुओं, वनस्पतियों व मनुष्यों का जीवन एक दूसरे से संबंधित हैं इसलिये व्यक्ति को सभी जीवों का सम्मान करना चाहिये। इसी प्रकार बहाई धर्म का मानना है कि प्राकृतिक ऐश्वर्य और विविधता मानव जाति पर ईश्वर की कृपा है, अतः हमे इसकी रक्षा करनी चाहिये। वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण तथा भूमंडलीय उष्मन के नियंत्रण हेतु व्यापक प्रयास किये जा रहे हैं लेकिन इसके माध्यम से पर्यावरणीय लक्ष्यों को प्राप्त करने की राह अभी भी काफी दूर है। अतः इन लक्ष्यों को जन सामान्य की भागीदारी के माध्यम से संभाव्य बनाया जा सकता है। विश्व के सभी समुदायों में धर्म एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है और बड़ी संख्या में लोग धर्म में आस्था रखते हैं। इसलिये पर्यावरण संरक्षण में धर्म अहम भूमिका निभा सकता है और पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने में मदद मिल सकती है। विभिन्न धर्मों में पर्यावरण संरक्षण हेतु अलग–अलग सुझाव दिये गए हैं जो कि इस प्रकार है– हिंदू धर्म हिंदू धर्म मानता है कि इन पांच तत्वों में से प्रत्येक पांच इंद्रियों में से एक से मेल खाता है और वे मानव शरीर का निर्माण करते हैं। मानव जीभ जल से, मानव आंखें अग्नि से, मानव त्वचा वायु से और मानव कान अंतरिक्ष से जुड़ी हुई हैं। मनुष्य के रूप में हम प्राकृ तिक दुनिया के साथ कैसे संपर्क करते हैं इसका आधार हमारी इंद्रियों और तत्वों के बीच का संबंध है। हिंदू धर्म में प्रकृति और पर्यावरण हमसे बाहर की चीज़ नहीं हैं।

- हिंदू धर्म में प्रकृति को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है तथा प्रकृ ति के विभिन्न रूपों को देवी देवताओं का रूप माना गया है। हिंदू धर्म के अनुसार, जीवन पाँच तत्त्वों– क्षिति (पृथ्वी), जल, पावक (अग्नि), गगन (आकाश), समीर (वायु) से मिलकर बना है।
- हिंदू धर्म में पृथ्वी को देवी का रूप माना गया है। इसके अलावा इसके विभिन्न अवयव जैसे– पर्वत, नदी, जंगल, तालाब, वृक्ष, पशु–पक्षी आदि सभी को दैवीय कथाओं व पुराणों से जोड़कर देखा जाता है।
- हिंदू ग्रंथ जैसे– भगवद्गीता में अनेक स्थानों पर कहा गया है कि ईश्वर सर्वव्यापी है तथा विभिन्न रूपों में सभी प्राणियों में विद्यमान है इसलिये व्यक्ति को सभी जीवों की रक्षा करनी चाहिये।
- हिंदू धर्म में कर्म की प्रधानता पर बल दिया जाता है और यह विश्वास किया जाता है कि व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार ही फल प्राप्त होता है। इसके अलावा व्यक्ति के कर्मों का प्रभाव प्रकृति पर भी पड़ता है अतः मानव जाति को प्रकृति तथा उसके विभिन्न जीवों की रक्षा करना चाहिये।
- हिंदू धर्म में पुनर्जन्म (Reincarnation) पर विश्वास किया जाता है। इसके अनुसार, मृत्यु के बाद कोई व्यक्ति पृथ्वी पर विद्यमान किस जीव के रूप में जन्म लेगा यह उसके कर्मों पर निर्भर करता है। इसलिये सभी जीवों के प्रति अहिंसा हिंदू धर्म का मुख्य सिद्धांत है।
- वेद, उपनिषद और पुराण वेद, उपनिषद और अन्य शास्त्रीय हिंदू ग्रंथ पौधों, जानवरों और पेड़ों के साथ–साथ लोगों के लिए इन चीजों के महत्व को बहुत महत्व देते हैं। पारिस्थितिक संतुलन, मौसम चक्र, वर्षा की घटनाओं, जल विज्ञान चक्र और अन्य संबंधित विषयों के कई संकेत प्राचीन वेदों में पाए जा सकते हैं, जो स्पष्ट रूप से उस समय के ऋषियों और लोगों की उच्च स्तर की चेतना को प्रदर्शित करते हैं। वैदिक युग में, लोग प्रकृति और पर्यावरण के प्रति समग्र दृष्टिकोण रखते थे और इसके प्रत्येक भाग और इकाई का सम्मान करते थे और उनके संरक्षण का बहुत ध्यान रखते थे।
- जीवन को बनाने वाले पांच तत्व – पृथ्वी, जल, अग्नि, अंतरिक्ष और वायु – को ऋग्वेद में सभी जीवन की नींव के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। ऋग्वेद में इसका स्पष्ट संकेत मिलता है। ऋग्वेद में एक सुरक्षात्मक परत के अस्तित्व का स्पष्ट उल्लेख है, जिसे अब हम ओजोन परत समझते हैं, जो पृथ्वी को सूर्य की हानिकारक किरणों से बचाती है। यजुर्वेद के अनुसार, यज्ञ अग्नि में मक्खन और लकड़ी डालकर यज्ञ करना चाहिए ताकि यह हवा के साथ मिल जाए और आसपास के क्षेत्र को शुद्ध कर दे।
- आकाश को साफ रखने और जीवन का समर्थन करने वाले जल निकायों के लिए प्रार्थना करने के महत्व का उल्लेख किया गया है। सामवेद, अन्य वेदों की तरह, मौसमी चक्रों को संरक्षित करने के महत्व को स्वीकार करता है, जो अनुचित मानव व्यवहार और जलवायु

परिवर्तन के कारण परिवर्तन के लिए अतिसंवेदनशील होते हैं। अथर्ववेद में देने और लेने की एक अलग समझ है, जिसमें कहा गया है कि कोई भी पृथ्वी और वायुम ंडल से उतना ही ले सकता है, जितना उन्हें वापस देगा।

- ❖ अथर्ववेद कई अन्य विषयों पर भी जोर देता है, जैसे जल स्वच्छता, वन्यजीवों का संरक्षण और मवेशियों जैसे जानवरों को पालतू बनाना। प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने पर्यावरण की सुरक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया, जिसमें चाणक्य भी शामिल थे। उनके न्यायशास्त्र के अनुसार, राज्य को जंगलों को बनाए रखने के लिए मजबूर किया गया था, पेड़ों को काटने और जंगलों को नुकसान पहुंचाने के लिए दंड लागू किया गया था, और जंगली जानवरों को आरक्षित जंगलों में रखा गया था जहां मनुष्यों के लिए खतरा होने पर उन्हें मार दिया जाता था या कैद कर दिया जाता था।
- ❖ वे इसे पर्यावरण विषाक्तता के रूप में संदर्भित करते हैं, भले ही "प्रदूषण" शब्द अभी तक अस्तित्व में नहीं था। उनका तर्क है कि पर्यावरण को बनाने वाले पांच प्राथमिक तत्व – अंतरिक्ष, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी – सभी प्रकृति नामक मौलिक ऊर्जा के वंशज हैं, और मानव शरीर उनसे संबंधित इन तत्वों से बना है और पांच इंद्रियों में से प्रत्येक से जुड़ा हुआ है। वेदों को सृष्टि विज्ञान का प्रमुख ग्रंथ माना गया है। वेदों में पर्यावरण संतुलन के महत्व को प्रतिपादित करते हुए जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी का स्तवन अनेक स्थलों में किया गया है। अग्नि को पिता के समान कल्याणकारी कहा गया है। 'अग्ने। सूनवे पिता इवनः स्वस्तये आ सचस्व' ऋग्वेद का प्रथम मंत्र ही अग्नि तत्व के स्तवन से होता है।

ऋग्वेद(1.23.248) में जल के महत्व को इस प्रकार बताया गया है –'अप्सु अन्तःअमृतं, अप्सु भेषजं' अर्थात जल में अमृत है,जल में औषधि गुण विद्यमान रहते हैं अस्तु, आवश्यकता है जल की शुद्धता, स्वच्छता बनाये रखने की ।

ऋग्वेद (1,555,1976) के ऋषि का आशीर्वादात्मक उद्‌गार हैदृ 'पृथ्वीःपूःच उर्वी भव –अर्थात समग्र पृथ्वी संपूर्ण परिवेश परिशुद्ध रहे, नदी, पर्वत, वन, उपवन सब स्वच्छ रहें, गांव, नगर सबको विस्तृत और उत्तम परिसर प्राप्त हों तभी जीवन का सम्यक विकास हो सकेगा।

यजुर्वेद में यज्ञ विधियां एवं यज्ञ में प्रयोग किये जाने वाले मंत्र हैं। यज्ञ स्वयं एक चिकित्सा है। यज्ञ वायु मंडल को शुद्ध कर रोगों और महामारियों को दूर करता है। अथर्ववेद में आयुर्वेद का अत्यंत महत्व है। अनेक प्रकार की चिकित्सा पद्धति एवं जड़ी बूटियां तथा शल्य चिकित्सा व विभिन्न रोगों का वर्णन है। सामवेद में ऐसे मंत्र मिलते है जिनसे ये प्रमाणित होता है कि वैदिक ऋषियों को ऐसे वैज्ञानिक सत्यों का ज्ञान था जिनकी जानकारी आधुनिक वैज्ञानिकों को सहस्राब्दियों बाद प्राप्त हो सकी।

वैदिक साहित्य में प्राकृतिक पदार्थों से कल्याण की कामना को स्वस्ति कहा गया है, जिसका आचार्य सायण "अविनाशं क्षेमं–सुरक्षित क्षेम" अर्थ किया है। इस नैरुक्त चिंतन है – अलब्धस्य लाभो योगः, प्राप्तस्य संरक्षणं क्षेमः – अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति योग है तथा प्राप्त का संरक्षण क्षेम। अतः सहज सुलभ प्राकृतिक पदार्थों का सुरक्षित रहना ही स्वस्ति है। इसीलिए हमारे मनीषियों नेउद्‌घोष किया है – "ॐ द्यौ शान्तिः, अंतरिक्ष शांतिः, पृथ्वी शांतिः, आपःशांतिः।" अतः मनुष्य को अपने मन ,वचन और आचरण एवं व्यवहार से प्रकृति के कोप को शांत करके ही अपना जीवन सुखी और शांत बना सकता है।

विष्णु पुराण का एक उद्धरण :–

"जिस प्रकार व्यापक रूप से फैला हुआ नरगोधा (बरगद के लिए संस्कृत) का पेड़ एक छोटे से बीज में संकुचित होता है, उसी प्रकार विघटन के समय, संपूर्ण ब्रह्मांड उसके अंकुर के रूप में आप में समाहित होता है; जैसे नरगोधा बीज से अंकुरित होता है, और केवल एक अंकुर बन जाता है और फिर बुलंदी की ओर है परन्तु वर्तमान में पर्यावरण के प्रति इस भावधारा के तिरोहित होते ही प्रकृति के शोषण और शोषक रूपी आत्मघाती मनोवृत्ति पनपी, जिसके अभिशप्त परिणाम से वर्तमान में विश्व त्रस्त हो रहा है।

भारतीय वैदिक संस्कृति में पर्यावरण को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। इसके संरक्षण एवं विकास पर हमारी संस्कृति पूर्णतः जागरूक रही है। यहाँ मानव जीवन को सदैव एवं अमूर्त रूप में पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र, नदी, वृक्ष एवं पशु–पक्षी आदि के साहचर्य में ही देखा गया है। पर्यावरण के ये तत्व हमारे जीवन के आधार हैं, अतः इनको संरक्षण प्रदान करना हमारा कर्तव्य है। हमारा जीवन पर्यावरण से सघनता से सम्बन्धित है। भारतीय संस्कृति मानती है कि इस देह की रचना पंचतत्वों (क्षिति, जल, पावक, अग्नि, वायु, आकाश) से ही हुई है। हमारे वैदिक ग्रन्थों में इन्हीं पंचतत्वों को मानव मात्र के लिये शुभ–अशुभ, अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियों का सूचक भी माना जाता है, क्योंकि इन्हीं पंचतत्वों के सूक्ष्मभांश से मानव शरीर निर्मित हुआ है।

इन पंचतत्वों में भी शुद्ध वायु और जल मानव जीवन के लिये अति आवश्यक है, क्योंकि हमारे जीवन भूत प्राणों में शक्ति का संचार वायु से ही होता है। इसके साथ ही वायु हमारे जीवन का आधार है, जलीय तत्व, जो रक्त के साथ हमारी धमनियों में भी प्रवाहित होता है और इन्हीं तत्वों के फलस्वरूप हमारी प्राणशक्ति, बल और उर्जा का निर्माण होता है। अतः इन तत्वों की रक्षा करना सही अर्थों में मानव व इस सुन्दर सृष्टि की रक्षा करना ही है, क्योंकि इन्हीं तत्वों से मिलकर हमारे पर्यावरण का निर्माण होता है। चाणक्य ने कहा था साम्राज्य की स्थिरता पर्यावरण की स्वच्छता पर निर्भर करती है। वैदिक साहित्य में प्रकृति के संरक्षण की भावना विशद रूप से दृष्टिगत होती है।

पर्यावरण का तात्पर्य है 'परित आवरणं पर्यावरण अथवा परितः आवृणोति इति पर्यावरणम् अर्थात प्राणि जगत को सभी ओर से आवृत करने वाले तथा प्रभावित करने वाले तत्व यथा पृथ्वी जल, वनस्पति, वायु, आकाश, वायुमण्डल आदि पर्यावरण कहलाते हैं।

वेदों में वातावरण शुद्धि हेतु पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, अग्नि, वनस्पति, वायुमण्डल की प्रार्थना इसलिये की गयी है कि पर्यावरण का अस्तित्व ही इनके द्वारा है। वेदों में नदियों का खूब वर्णन है। नदियों और मुनि विश्वामित्र का संवाद 'रमध्वंमेवर्चसे सोम्याय ऋर्तावर्रीरूप मुहुर्तमेवै' वेदों में स्पष्ट रूप से वनों और वन्य जीवों का भी वर्णन है जो पर्यावरणीय विचारधारा को पुष्ट करता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि जीवनदायी तत्वों की शुद्धता संरक्षित हो तो जीवन भी शुद्ध और सुरक्षित रहता है।

समूची सृष्टि पंचमहाभूत अर्थात पंचतत्वों से विनिर्मित है। अग्नि, जल, पृथ्वी, वायु और आकाश यही किसी न किसी रूप में जीवन की सृष्टि करते हैं। वेदों को सृष्टि विज्ञान का मुख्य ग्रन्थ माना गया है क्योंकि इनमें सृष्टि के जीवनदायी तत्वों की विशेषताओं का काफी सूक्ष्म व विस्तृत विवरण है। ''ऋग्वेद में अग्नि के रूप, रूपान्तर और उसके गुणों की व्याख्या की गई है। यजुर्वेद में वायु के गुणों, कार्य और उसके विभिन्न रूपों का आख्यान मिलता है। अर्थवेद पृथ्वी तत्व का मुख्य वेद है। सामवेद का प्रमुख तत्व जल है। आकाश तत्व का वर्णन सभी वेदों में हुआ है। वैदिक महर्षियों ने इन प्राकृतिक शक्तियों को देवता स्वरूप माना, इसलिये उन दिनों जड़–चेतन सभी रूपों की उपासना व अभ्यर्थना की जाती थी।

पर्यावरण संरक्षण हेतु धार्मिक संस्थाओं द्वारा प्रयास :–
ऊपर दिये गए बिंदुओं से यह पता चलता है कि विश्व के सभी धर्मों में पर्यावरण को संरक्षित करने की बात कही गई है। प्रकृति के संरक्षण के लिये विभिन्न धार्मिक समूहों द्वारा वैश्विक या स्थानीय स्तर पर कई प्रयास किये जा रहे हैं। पाकिस्तान में स्थित कब्रगाहों में प्राचीन वृक्षों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं क्योंकि इनको काटना गुनाह माना जाता है, लेबनान के मैरोनाईट चर्च ने हरीसा के जंगलों को पिछले 1,000 वर्षों से संरक्षित रखा है, थाईलैंड के बौद्ध भिक्षुओं ने संकटग्रस्त जंगलों की रक्षा हेतु वहाँ छोटे–छोटे विहारों की स्थापना की है तथा उसे को पवित्र जंगल घोषित किया गया है।

- इसके अलावा जर्मनी के 300 चर्चों ने स्थानीय सम ुदायों के सहयोग से सौर ऊर्जा प्रणाली अपनाई है तथा वृहत स्तर पर इसका लगातार प्रचार–प्रसार किया जा रहा है। अमेरिका में रहने वाले अफ्रीकी म ूल के लोगों द्वारा क्वान्ज़ा त्यौहार प्रकृति संरक्षण का एक उपयुक्त उदाहरण है।
- वर्ष 1986 में इटली के शहर असीसी में विश्व वन्यजीव कोष द्वारा 'असीसी घोषणा' का आयोजन किया गया। इसमें विश्व के पाँच प्रमुख धर्मों (इसाई, हिंदू, इस्लाम, बौद्ध तथा यहूदी) के प्रतिनिधियों को आम ंत्रित किया गया था ताकि वे इस म ुद्दे पर सुझाव प्रस्तुत कर सकें कि उनके धर्मों में प्रकृति संरक्षण हेतु क्या प्रावधान है तथा किस प्रकार वे योगदान कर सकते हैं?
- वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण हेतु विभिन्न धर्मों के सहयोग से अलायंस ऑफ रिलिजन एंड कंसर्वेशन नामक संगठन की स्थापना वर्ष 1995 में की गई थी।
- WF तथा ARC के सहयोग से 'लिविंग प्लैनेट कै ंपेन' नामक एक मुहिम शुरू की गई। इसके तहत विश्व के प्रमुख धर्मों ने पर्यावरण संरक्षण हेतु कार्य करने की प्रतिबद्धता प्रदर्शित की तथा उनकी इस प्रतिबद्धता को 'जीवंत पृथ्वी के लिये पवित्र उपहार' का नाम दिया गया।
- इस अभियान के तहत वकालत, शिक्षा, स्वास्थ्य, भूमि, संपत्ति, जीवनशैली तथा मीडिया के क्षेत्र म ं पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करना शामिल है।
- इस प्रतिबद्धता के तहत जैन धर्म ने अंतर्राष्ट्रीय जैन व्यापार पुरस्कार प्रारंभ किया है। इसके तहत उन कंपनियों को पुरुस्कृत किया जाता है जिन्होंने पर्यावरणीय प्रभावों को कम करते हुए प्रगति की है। इसी प्रकार स्वीडन के लूथरन चर्च के सहयोग से स्वीडन में नेशनल फॉरेस्ट स्टेवर्डशिप काउंसिल की स्थापना की गई।

निष्कर्ष :–

भारत में पर्यावरण संरक्षण की प्राचीन परंपरा रही है। अधिकांश प्राचीन ग्रंथ हमें सिखाते हैं कि प्रकृति की रक्षा करना किसी भी समाज के प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है। यही कारण है कि लोग सदैव प्रकृति की वस्तुओं की पूजा करते आये हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में वृक्ष, जल, भूमि और जीव–जंतुओं का महत्वपूर्ण उल्लेख है। हिंदू धर्म में, हम पाते हैं कि वेदों, उपनिषदों और हिंदू धर्म के अन्य प्राचीन ग्रंथों में पेड़–पौधों और वन्य जीवन को बहुत महत्व दिया गया है और मनुष्यों के लिए भी उनका मूल्य बताया गया है।. वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों, पुराणों, रामायण, महाभारत, गीता, कहानियों सहित पौराणिक साहित्य, सामाजिक और नैतिक संहिताओं और राजनीतिक नियमों नामक हिंदू धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि निम्नलिखित सामान्य मार्गदर्शक सिद्धांत थे जिनका सभी को पालन करना चाहिए। उनके दैनिक जीवन में. प्राचीन काल में हमारी संस्कृति में पर्यावरण की सुरक्षा को लेकर सुविकसित तंत्र स्थापित था। मानव आचरण को पर्यावरण की सुरक्षा के अनुरूप संशोधित किया गया। हमारी प्राचीन कानूनी संहिताएं जैसे वेद, उपनिषद, पुराण आदि पर्यावरण की रक्षा करती थीं। हमें अपनी प्राचीन पर्यावरण संरक्षण प्रणाली को अपनाने की आवश्यकता है। इसी तरह विभिन्न स्तर पर सभी धर्मों के सहयोग से पर्यावरण संरक्षण के लिये अनेक कार्य किये जा रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. रेगा सूर्या राव (2006)। पर्यावरण कानून पर व्याख्यान एशिया लॉ हाउस (हैदराबाद)।
2. एस शांताकुमार (2015)। पर्यावरण कानून का परिचय (दूसरा संस्करण): लेविस नेवीज़।
3. डॉ. एन.वी. परांजपेः भारत में पर्यावरण कानून और प्रबंधन (2015 संस्करण) थॉमसन रॉयटर्स, कानूनी।
4. डॉ. सुरेंद्र कुमार पचौरी (2006)। उद्योग पर पर्यावरण कानूनों का प्रभाव। आदित्य बुक्स प्रा. लिमिटेड
5. डॉ. एस.आर. मेयनीः पर्यावरण अध्ययन प्रकाशित पुस्तक 2020
6. अर्चना भट्टाचार्जीः पर्यावरण क्षरण; रबिंदरनाथ टैगोर की चयनित कविताओं म ` मुद्दे और चिंताएँ, गैलेक्सी; अंतर्राष्ट्रीय बहुविषयक जर्नल 2020
7. पर्यावरण पर अतिउर रहमान टैगोर के विचार, 2021
8. कन्नन, वेदविकास, वैदिक प्रबंधन, वैदिक विज्ञान और वैदिक संस्कृति का ऑनलाइन भंडार
9. एस शांताकुमार (2015)। पर्यावरण कानून का परिचय (दूसरा संस्करण): लेविस नेवीज़।
10. डॉ. एन.वी. परांजपेः भारत में पर्यावरण कानून और प्रबंधन (2015 संस्करण) थॉमसन रॉयटर्स, कानूनी।
11. डॉ. सुरेंद्र कुमार पचौरी (2006)। उद्योग पर पर्यावरण कानूनों का प्रभाव। आदित्य बुक्स प्रा. लिमिटेड ।
12. डॉ. एस.आर. मेयनीः पर्यावरण अध्ययन 2019
13. डॉ. पी.एस. जसवाल और वी. जसवालः पर्यावरण कानून।
14. ऋग्वेद(1.23.248)
15. ऋग्वेद(1,555,1976)

.